Education through self-helf is our motto
- Karmaveer

Chandrabai-Shantappa Shendure College
Hupari

CERTIFICATE

This is to certify that Dr./Shri/Smt. प्रा.डॉ. सिद्राम खोत ..... of चंद्राबाई-शांताप्पा शेंडुरे कॉलेज हुपरी जि. कोल्हापूर ..... participated and presented paper on 'काव्य के आईने में वैश्वीकरण' ..... in the International Conference on "Business Management, Information System, Social Sciences & Language & Literature: A Need for 2020", organised by Department of Commerce, Chandrabai-Shantappa Shendure College, Hupari, Kolhapur, MS; India in collaboration with BVDU's Institute of Management and Entrepreneurship Development, Pune, MS; India and Shivaji University Commerce and Management Teachers Association; Kolhapur, MS; India during 4th & 5th December, 2015 at Hupari, Kolhapur, MS, India.

BHARATI VIDYAPEETH DEEMED UNIVERSITY
imed
INSTITUTE OF MANAGEMENT AND ENTREPRENEURSHIP DEVELOPMENT

Reg. No. 19172 Dt. 6-12-2003
SHIVAJI UNIVERSITY
COMMERCE AND
MANAGEMENT
TEACHERS
ASSOCIATION,
KOLHAPUR, MS, INDIA

Dr. V. A. Mane Convener, CSS College, Hupari	Dr. A. M. Gurav President, SUCOMATA, Kolhapur	Dr Sachin Vernekar Dean & Director, IMED, Pune	Dr. T. S. Patil Principal, CSS College, Hupari

ISBN : 978-93-81549-93-3

'Education through Self-help is our motto – Karmaveer'

Rayat Shikshan Sanstha's

Chandrabai-Shantappa Shendure College,Hupari,

Tal. Hatkanangale, Dist. Kolhapur 416 203 M. S., India.

Re-accrediated by NAAC with 'B' Grade, CGPA : 2.66

CONFERENCE PROCEEDING

Two Day International Conference

On

"Business Management, Information System, Social Sciences & Language & Literature : A Need for 2020"

Organized by

Chandrabai-Shantappa Shendure College, Hupari in Collaboration with Shivaji University Commerce and Management Teacher's Association, Kolhapur and BVDU's Institute of Management and Entrepreneurship Development, Pune

On 4th and 5th December, 2015

अनुक्रम

1.	वैश्वीकरण के दौर में बदलते स्त्री–पुरुष संबंध (मृदुला गर्ग के 'कठगुलाब' उपन्यास के संदर्भ में)	डॉ. नारायण विष्णु केसरकर	1
2.	आदिवासी केंद्रित हिंदी कविता : वैश्वीकरण और विस्थापन	प्रा.डॉ.पंडित बन्ने	3
3.	'दौड़' उपन्यास में प्रतिबिंबित भूमंडलीकरण के विविध आयाम	डॉ. कामायनी गजानन सुर्वे	6
4.	काव्य के आईने में वैश्वीकरण	डॉ. सिद्राम खोत	11
5.	समकालीन हिंदी कविता और भूमंडलीकरण	डॉ. नाजिम शेख	14
6.	राजेश जोशी कृत 'चाँद की वर्तनी' काव्यसंग्रह में प्रतिबिंबित भूमंडलीकरण	प्रा. डॉ.संदीप जोतीराम किर्दत	16
7.	'भुमंडलीकरण और हिंदी उपन्यास साहित्य'	लैफटनंट डॉ.रविंद्र पाटील	19
8.	वैश्वीकरण और हिंदी कथा साहित्य में स्त्री–विमर्श	प्रा.डॉ.सौ.सुरैय्या इसुफअल्ली शेख.	21
9.	भूमंडलीकरण का आईना – उपन्यास "दौड"	प्रा. डॉ. शहनाज महेमुदशा सय्यद	23
10.	हिंदी कविता और भूमंडलीकरण	प्रा.डॉ.सौ.शैलजा रमेश पाटील	28
11.	वैश्वीकरण की सार्थकता का यथार्थ चित्रण-दौड	डॉ.उत्तम लक्ष्मण थोरात	31
12.	साठोत्तरी हिंदी कविता में राजनैतिक चेतना	प्रा. डॉ. आर.पी.भोसले	33
13.	वैश्विकरण और हिंदी कविता	प्रा. मारूफ मुजावर	34
14.	भूमंडलीकरण और भारतीय शिक्षा व्यवस्था ('और सिर्फ तितली' के संदर्भ में)	प्रा. सचिन मदन जाधव	37
15.	भूमंडलीकरण और हिन्दी कविता	प्रा. अश्विनी श्रीराम परांजपे	39
16.	वैश्विकरण – बाजारीकरण के दौर में बदलते स्त्री पुरूष संबंध (मृदुला गर्ग कठगुलाब उपन्यास के विशेष संदर्भ में)	प्रा. अशोक गोंविदराव उघडे	42
17.	हिंदी भाषा का अंतर्राष्ट्रीय स्वरुप–मारीशस का हिंदी भाषा साहित्य	प्रा. सौ. मानसी संभाजी शिरगांवकर	45
18.	वैश्वीकरण और हिंदी कहानी (सूर्यबाला के 'मानुश – गंध' कहानी के संदर्भ में)	प्रा. कोळी एस. टी.	47
19.	"वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में दलित साहित्य"	प्रा. बाबासाहेब तुकाराम साबळे	49
20.	भूमंडलीकरण और हिंदी कविता	प्रा. वर्णेकर एम. व्ही.	52
21.	भूमंडलीकरण का यथार्थ : एक ब्रेक के बाद	श्रीमती नेहा अनिल देसाई	54
22.	भूमंडलीकरण और हिंदी उपन्यास ('रेहनपर रग्घू', 'दौड' उपन्यासों के संदर्भ में)	प्रा. समाधान शिवाजी नागणे	57
23.	पाषाण–युग आतंकवादी गतिविधियों का दस्तावेज	प्रा. आर.बी. भुयेकर	59
24.	भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी कविता : एक अनुशीलन	प्रा. रमेश आण्णाप्पा आंदोजी	61
25.	भूमंडलीकरण और हिंदी साहित्य (मिथिलेश्वर जी के उपन्यास में चित्रित सामाजिक संदर्भ)	डॉ. के.बी. भोसले	64
26.	'जागतिकीकरणाचा मराठी साहित्यातील प्रभाव – अरुण काळे यांच्या ' नंतर आलेले लोक ' या कवितासंग्रहाधारे'	प्रा. डॉ. संजय पाटील	67
27.	"जागतिकीकरण आणि मराठी ग्रामीण कविता"	प्रा. डॉ. रमेश पोळ	70
28.	जागतिकीकरणाचा मराठी कादंबरीवरील प्रभाव	प्रा. डॉ. शिवाजी महादेव होडगे	72
29.	जागतिकीकरण आणि मराठी भाषा संवर्धन	डॉ. शिवलिंग मेनकुदळे	74
30.	जागतिकीकरण आणि मराठी ग्रामीण कादंबरी	प्रा. एकनाथ शामराव पाटील	76

ISBN : 978-93-81549-93-3

काव्य के आईने में वैश्वीकरण

डॉ. सिद्राम खोत, अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
चंद्राबाई–शांताप्पा शेंडुरे कॉलेज, हुपरी।

प्रत्येक कविता अपने युग की पहचान है । यह भी सत्य है कि उसमें अतीत के चित्रण और भविष्य के संकेत भी युग संदर्भ से जुडकर आते हैं । काव्य साहित्य की सशक्त अभिव्यक्ति की महत्त्वपूर्ण भावधारा है । मनुष्य के अंतर्जगत और बाहयजगत का सही चित्रण काव्य के द्वारा होता है । मनुष्यजीवन में काव्य का महत्त्व शाश्वत है । सच्चे अर्थों में काव्य सबसे प्राचीन बहुचर्चित विधा है स्पष्ट है कि साहित्य के विभिन्न प्रकारों में काव्य का सर्वोपरि स्थान है ।

आधुनिक युग में साहित्यिक जगत में वैश्वीकरण बाजारवाद, आदिवासी, दलित तथा नारी विमर्श आदि धाराओं का सूत्रपात हुआ है । आज का युग यानी भूमंडलीकरण तथा प्रौद्योगिकी का युग है । सूचना प्रौद्योगिकी की पिढी डायनेमिक है । आज सारा विश्व गॉव में तब्दिल हुआ है । आज पलक झपकते ही दुनिया की सारी जानकारी उपलब्ध होती है । वैश्वीकरण को ही विश्ववाद कहा जाता है वैश्वीकरण, उदारीकरण या भूमंडलीकरण का प्रभाव समूच्चे दुनिया पर पडा है । अनेक कवि इसकी चपेट में आ गये है । वैश्वीकरण यह शब्द अंग्रेजी के 'ग्लोबालाईजेशन' का हिंदी अनुवाद है ।

वैश्वीकरण भारतीयों के लिए कोई नई बात नही है । भारत के विभिन्न धार्मिक ग्रंथो और संतो का भाव विश्वात्मक भाव दर्शाता है । इस्ट इंडिया कंपनी का आगमन, वास्को–द–गामा का आगमन तथा पाषाण युग से आज तक चला आ रहा बाजार वैश्वीकरण की संकल्पना समझने में काफी है। सन 1985 में थियांडर लेव्होट ने सबसे पहली बार वैश्वीकरण शब्द का प्रयोग किया । भारत वर्ष में वैश्वीकरण या भूमंडलीकरण 24 जुलाई 1991 में आर्थिक उदारीकरण की नीति के परिणाम स्वरूप शुरू हुआ । गिरीश मिश्र का कथन बिल्कुल सही है कि, ''मानवितिहास में एक नया युग शुरू हुआ है । जिसमें राष्ट्रीय सीमाऍं निरर्थक हो गई है और राष्ट्र, राज्य की अवधारणा कुडेदान में चली गई है । भूमण्डलीय बाजार के तर्क कि मॉग है कि सभी देश अपने दरवाजे वस्तुओं और पूँजी के उन्मुक्त प्रवाह के लिए खोल दें। उनके पास दूसरा कोई विकल्प नहीं ।'' [1]

भूमंडलीकरण और बाजारीकरण के प्रभाव तथा परिणामों का सही आभास हिंदी काव्य जगत में 1980 से ही होना प्रारंभ हो गया था । हिंदी के जाने माने साहित्यकार, वीरेन डंगवाल जी ने हमारा समाज कविता के माध्यम से समाज का असली रूप चित्रित किया है :

''मोटर सफेद वह काली है,
वे गाल गुलाबी काले हैं,
चिन्ताकुल चेहरा बुध्दिमान
पोथे कानूनी काले हैं
आटे की थैली काली है
हर सॉस विषैली बरों का
वह भव्य इमारत काली है ।''[2]

भूमण्डलीय संस्कृति, बाजारवादी संस्कृति की चपेट कि चर्चा में फॅसे हुए समाज की स्थिति देखकर कोई भी रचनाकार चिंतित होना स्वाभाविक है। आज वैश्वीकरण से कतिपथ उपलब्धियॉ सिर्फ छलावा नजर आ रही है। यह सत्य है कि आसपास का परिप्रेक्ष्य देखकर कोई भी रचनाकार चुप नहीं बैठता है । कवि इब्बार के अनुसार –

''यहॉ अंधेरा । यह अलगाव । यह बेचैनी
भूमण्डलीकरण के बीचो बीच ।
उसका यह अकेलापन । भूमण्डलीकरण का शोर
और मैं यह तट पर मैं केंद्र हूँ । ..... भूमण्डलीकरण का शोर है ।
और वीरान है बंदरगाह ।''[3]

ISBN : 978-93-81549-93-3

उपेक्षा की गठरी में । धैर्य के वजन से ।"[8]

भारत वर्ष की जनता या समाज या ग्रामीण जीवन देश की व्यवस्था का बुनियादी आधार था, वह इस नये भूमंडलीकरण के दौर में तितर–बितर हो गया है । रोजगार के मोह से आम आदमी रोटी, कपडा और मकान जैसी सामान्य जरूरतों के लिए अपना मकान तथा गॉव को छोडकर आता है।

"एक खामोश झील की तरह मैं
रहना चाहता था ।
नगरों की चीख जहॉ मुझे हिला सकती थी
हॅसना था अपवाद स्वरूप
तो अंदर से कॉपता रहता था ।"[9]

भूमंडलीकरण के दौर में मन मस्तिष्क का वैश्वीकरण होने की अपेक्षा अर्थ का वैश्वीकरण हुआ है । समाज में समानता की भावना को ठेस लगी है । मजदूरी करनेवाले पर भूखा रहने की नौबत आयी है। बाल मजदूरी की समस्या पर साहित्यकार चिंतित है । गरीबी की वजह से माता–पिता, बच्चों को पढाने की जगह काम पर भेज देते हैं । आर्थिक समानता पर डॉ. संतोष कुमार तिवारी लिखते है –

"जैसे ही कौर उठाया
हाथ रूक गया
सामने किवाड से लगकर
रो रहा था वह लडका
जिसने मेरे सामने
रखी थी थाली ।"[10]

'नाज' कविता में कवि कृष्णकुमारजी ने आम इन्सान की भयावह स्थिति का अंकन किया है ।

"निगल जाती है छोटी मछलियों
को हर बडी मछली
नियम कानुन सब लागू
यहॉ जंगल के होने है ।"[11]

असल में जीवन की आपाधापी में निम्न मध्यवर्ग पिसता जा रहा है। आज का काल ही विचित्र है सच्चे तथा अंच्छे लोक दुःख से ग्रस्त है ।

निष्कर्ष रूप में इतना ही कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण का रथ आज के युग में रोका नहीं जा सकता है । भले ही आर्थिक तथा भौतिक उन्नती जरूर हो रहीं हैं किंतु आर्थिक समानता नहीं है । दुर्भाग्य से आत्मा की भी उन्नति नहीं हो रही है । बाजारवादी संस्कृति के कारण संवेदना, रिश्ता, विश्वास, इन्सानियत पर प्रश्नचिन्ह निर्माण हुआ है । कुटिर उद्योग नष्ट होने के कारण रोजगार के मोह से गॉव छोडकर लोग नगर की चकाचौंध दुनिया पसंद कर रहे है । दलितों के लिए शिक्षा का द्वार खोल दिया है किंतु समाज व्यवस्था संकुचित बनती जा रही है ।

संदर्भ–संकेत

1. गिरीश मिश्र, बाजार, समाज और भूमण्डलीकरण, वाक् (त्रैमासिक) अंक 2, पृ. 161.
2. तीरेन डंगवाल, हमारा समाज, पृ. 15
3. इब्बार रब्बी, वर्षा में भीगकर, पृ. 27, 28
4. रवीशंकर पाण्डेय, बदल गया गॉव और ..... साहित्य अमृत, नवंबर 2000 अंक, पृ. 27
5. ओमप्रकाश वाल्मीकी, आईना, पृ. 14
6. डॉ. रमाकान्त शर्मा, गोधूलि, पृ. 11
7. एकान्तकुमार, मूल्य, पृ. 23
8. डॉ. नलिनी पुरोहित, मंथन, पृ. 109
9. असद जैदी, बहनें और अन्य कविताएँ, पृ. 20, 21
10. कृष्णकुमार, नाज, पृ. 26